रोहतासगढ़ 11वें तीर्थ मेला के सुअवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–10.02.2017, समय–पूर्वाह्न 11:00 बजे, स्थान–रोहतास)

रोहतासगढ़ 11वें तीर्थ मेला के सुअवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित माननीय सांसद श्री छेदी पासवान जी, अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगदेव राम उराँव जी, क्षेत्र संघ चालक श्री सिद्धनाथ सिंह जी, श्री गोविन्द नारायण सिंह जी, श्री महरंग उराँव जी, वनवासी कल्याण आश्रम के प्रांतीय अध्यक्ष श्री डोमा सिंह 'खरवार' जी, कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्यजन, पत्रकारगण, देवियों एवं सज्जनों !!

रोहतास–कैमूर पहाड़ी क्षेत्र, देवभूमि क्षेत्र है। विंध्य पर्वत श्रृंखला से यह जुड़ा हुआ है। रोहतासगढ़ किला हमारे देश की एक प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर है। सौन्दर्यीकरण से यह न केवल देश का एक आकर्षक पर्यटक स्थल बनने की क्षमता रखता है, बल्कि यहाँ स्वरोजगार भी विकसित होने की अपार संभावनाएँ हैं। इस दिशा में ठोस एवं सार्थक पहल अपेक्षित है।

बिहार का आर्थिक विकास खाद्य–प्रसंस्करण उद्योगों के विकास के साथ–साथ, पर्यटन प्रक्षेत्र के विकास पर निर्भर है। रोहतास जिले में कई ऐसे स्थल हैं, जिनका सौन्दर्यीकरण एवं सम्यक् रूप से विकास कर इस जिले के सर्वतोन्मुखी विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। राज्य सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है। रोहतासगढ़ के गौरवशाली इतिहास के साक्ष्य प्रमाण हैं कि यहाँ उराँव–खरवार एवं चेरों जनजाति राजाओं का साम्राज्य था।

कालांतर में आक्रमणकारी मुगल तथा अंग्रेजों की बर्बर हुकुमत ने उन्हें पलायन के लिए मजबूर कर दिया। शिकार की गौरवगाथा की कहानी यहीं से जुड़ी है। सभी विषयों का प्रामाणिक रूप से पुनः शोध कर, उसे आज संरक्षित एवं सम्वर्द्धित करने की आवश्यकता है, ताकि भावी पीढ़ी इससे प्रेरणा ले सके। यही इस तीर्थ मेला का मूल उद्देश्य है और इसकी सार्थकता भी। हमारे देश में विभिन्न प्रकार के जनजाति–समाज हैं। उनकी अपनी विलक्षण सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक पहचान है। इन्होंने अंग्रेजों और मुगलों से युद्ध किया, मर मिटे, परन्तु पराधीनता स्वीकार नहीं की। आजाद देश में जनजातियों के विकास हेतु कई कल्याणकारी योजनाएँ संचालित हो रही हैं, जिनके सफल कार्यान्वयन की आवश्यकता है। आदिवासी–वनवासी क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य व केन्द्र सरकार मिलकर नीति बनायें, तो यह क्षेत्र आकर्षण का केन्द्र बनकर उभरेगा।

वनवासी समाज का जीवन वनों पर आधारित रहा है। वनवासियों की भू–समस्या तथा उनके समग्र विकास हेतु समेकित नीति तैयार किये जाने की आवश्यकता है। दुर्गम पठारी वाले इस क्षेत्र में यातायात की घोर समस्या है। विद्युत, यातायात एवं परिवहन सुविधाओं का विकास यहाँ नितान्त आवश्यक है। कृषि के विकास हेतु सिंचाई–सुविधाओं का विकास भी बेहद जरूरी है। मैं समझता हूँ कि इस क्षेत्र के विकास हेतु अतिरिक्त प्रयासों की जरूरत है। केन्द्र एवं बिहार सरकार मिलकर इस क्षेत्र में घर–घर शिक्षा का अलख जगायें, चिकित्सा–सुविधाओं का विकास सुनिश्चित करें, श्रमिक कल्याण की विभिन्न योजनाओं को सम्यक् रूप से लागू करें, तो निश्चय ही हमारे ये वनवासी भाई–बहन समाज

की मुख्य धारा में शामिल होकर देश के नव–निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। वनवासी समूह की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत गौरवपूर्ण रही है। देश के स्वतंत्रता–आन्दोलन में भी इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इनकी वीरता एवं त्याग की गाथाएँ भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। आज अगर इनका सामाजिक और आर्थिक विकास हम सुनिश्चित कर देते हैं, तो निश्चय ही हमारे देश के समग्र विकास को और अधिक गति मिल जाएगी। बिहार राज्य में जनजाति समूहों की आबादी बहुत कम है। अतएव, इनके विकास की योजनाओं के निर्माण में यदि क्षेत्रीय आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए ठोस और सार्थक प्रयास किये जाएँ, तो निश्चय ही हम अपने वनवासी भाइयों–बहनों के कल्याण की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकते हैं। मेरा सुझाव होगा कि स्वरोजगार हेतु विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्र वनवासी क्षेत्रों में नियमित रूप से संचालित हों एवं कौशल–उन्नयन से जुड़ी राज्य एवं केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाएँ भी यहाँ तत्परतापूर्वक कार्यान्वित की जाएँ।

आज आवश्यकता है कि हम सभी अपने वनवासी भाइयों–बहनों को समाज की मुख्यधारा में लाने तथा उनके समग्र विकास हेतु भरपूर प्रयास करने का संकल्प लें। जनजाति/वनवासी समाज की ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। हमारे वनवासी–बन्धु युगों से भारत देश के पूर्ण समर्पित नागरिक रहे हैं। बाबा साहब डॉ॰ भीमराव अम्बेदकर जी ने 'भारतीय संविधान' में भी उनके हितों का भरपूर ख्याल रखा है। वनवासी भाई–बहनों की देशभक्ति, राष्ट्रनिर्माण में उनकी

भूमिका तथा त्याग की भावना सदा से अभिवंदनीय और गौरवान्वित करनेवाली रही है। मुझे विश्वास है कि आज आयोजित तीर्थ मेला के इस पुनीत अवसर पर हम सभी मिलकर एक नये समरस और शांतिपूर्ण समाज और देश के नवनिर्माण के सपने को साकार करने हेतु संकल्पित होंगे। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना